ISSN: 2321-8819 (Online) 2348-7186 (Print) Impact Factor: 1.498 Vol. 5, Issue 6, June 2017

'' बौध्द धर्म की आधुनिक युग को देन ''

निर्मल कीर्ति गेडाम
पी–एच.डी. शोधार्थी (समाजशास्त्र)
समाजशास्त्र एवं समाजकार्य विभाग, रानी दुर्गावती
विश्वविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.)
ईमेल– nirmalgedam@gmail.com, मोब.–9300121459

सारांश :– ''आज का विज्ञान मनुष्य जाति के विनाश के हथियारों को विकास का नाम दे रहा हैं। मानव अधिकारों का उलंघन राष्ट्रों का एक दुसरे के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा विकासशील राष्ट्रों की अर्थव्यवस्था पर कब्जा, आतंकवाद, भ्रष्टाचार, अराजकता, अव्यवस्था सम्पूर्ण विश्व में फलफूल रहे है। एक दुसरे से आगे निकलने की भावना ने मनुष्य को पूर्णतः स्वार्थी बना दिया है। ऐसे समय में संपूर्ण विश्व मानव समाज को एक ऐसे धम्म की आवश्यकता है, जो अंहिसा की सीढ़ियाँ चढ़कर मानव समाज को विकास की मंजिल पर पहुँचा सके। बुद्ध के द्वारा दिखाया गया संपूर्ण मानव जाति के कल्याण का मार्ग ही वर्तमान समय की मांग है। बुद्ध के बताये रास्ते पर चलकर ही विश्वशांति के साथ मानव जाति का विकास संभव है। सर्वप्रथम गौतम बुद्ध ने ही मानव जाति को मानवता का नया संदेश दिया। बुद्ध पहले धर्मनायक थे, जिन्होंने अपने धर्म के लिए किसी जाति और देश की सीमा नही रखी। महामानव बुद्ध ने वैदिक कर्मकाण्ड का निषेध करते हुये मानव को असंख्य देवताओं और रूढ़ धर्म के जड़ बंधनो से मुक्त किया। मानव को मानव की मर्यादा बताते हुये उसे जाति, वर्ण, धर्म से ऊपर स्थान दिया। उन्होंने यह सिद्ध किया कि मानव देवताओं से भी श्रेष्ठ है। वस्तुतः सभी भेदभाव से ऊपर उठकर जाति वर्ण और प्रचलित धर्म की सीमाओं को तोड़कर सर्वप्रथम गौतम बुद्ध ने ही मानव जाति को मानवता का नया संदेश दिया। ''

किवर्ड : बौध्द धम, आधुनिक युग

बुद्ध का अविर्भाव भारतीय इतिहास की एक महान घटना है। उनके अविर्भाव ने न केवल भारतीय धर्म और दर्शन के इतिहास को एक नया आयाम दिया। अपितु भारतीय चिंतन धारा में एक नया मोड़ ला दिया। इनका युग बौद्धिक कर्मकाण्डों का युग था। बलि की हिंसा प्रथा और पाखण्डियों के विवेक शून्य धार्मिक रीतियों के अत्याचारों से मुक्ति के लिए छटपटाते हुये युगजीवन को एक मानवीय और पूर्ण धर्म की आवश्कता थी। गौतम बुद्ध ने समय की इस मांग को पूरा किया।

मानवता के महान शिक्षक, वैचारिक क्रांति के प्रणेता, विश्व शांति के अग्रदूत, महामानव गौतम बुद्ध का जन्म कपिलवस्तु राज्य के एक क्षत्रिय राजा शुद्धोधन के यहाँ 563 ई.पू. में हुआ। गृहस्थ आश्रम में प्रवेश के पश्चात ज्ञान की खोज मे सिद्धार्थ (बुद्ध के बचपन का नाम) ने गृह त्याग किया। कठिन तपस्या के पश्चात इन्हें बुद्धत्व की प्राप्ति हुई और वे बुद्ध कहलाये। ज्ञान प्राप्ति के बाद बुद्ध ने निश्चय किया कि वे ज्ञान का प्रचार लोककल्याण के लिए करेंगे। महामानव बुद्ध ने वैदिक कर्मकाण्ड का निषेध करते हुये मानव को असंख्य देवताओं और रूढ़ धर्म के जड़ बंधनो से मुक्त किया। मानव को मानव की मर्यादा बताते हुये उसे जाति, वर्ण, धर्म से ऊपर स्थान दिया। उन्होंने यह सिद्ध किया कि मानव देवताओं से भी श्रेष्ठ है। वस्तुतः सभी भेदभाव से ऊपर उठकर जाति वर्ण और प्रचलित धर्म की सीमाओं को तोड़कर सर्वप्रथम गौतम बुद्ध ने ही मानव जाति को मानवता का नया संदेश दिया। बुद्ध पहले धर्मनायक थे, जिन्होंने अपने धर्म के लिए किसी जाति और देश की सीमा नही रखी। उन्होंने संसार के कोने–कोने में अपने शिष्यों को धर्म प्रचार के लिये भेजा। सभी जातियों और वर्गो के लोगों को उन्होंने भिक्षु संघ में सम्मिलित किया।

सद्धम्म प्रसार की इस सत्वर गति में महामानव बुद्ध के आकर्षक व्यक्तित्व एंव उनके उपदेशों की सामयिक अनुकूलता की महत्वपूर्ण भूमिका थी। इस धर्म से प्रभावित होकर अनेक राजाओं जिनमें बुद्ध के समकालीन राजा बिम्बिसार, राजा प्रसेनजित का राजकीय संरक्षण इस धर्म को प्राप्त हुआ। तत्पश्चात् मौर्यकाल (323 ई.पू. 184 ई.पू.) के समय महान चक्रवृति सम्राट अशोक ने स्वयं बौद्ध धम्म ग्रहण कर इस धर्म के प्रचार के लिये अपने पुत्र महेन्द्र और पुत्री संघमित्रा को बौधी वृक्ष के साथ श्रीलंका भिजवाया तथा इसी समय अनेक बौद्ध भिक्षुओं ने विभिन्न देशों की धर्मयात्रा कर बौद्ध धम्म का प्रचार–प्रसार किया। सम्राट अशोक ने बौद्ध धम्म के प्रचार के लिये 84000 बौद्ध स्तूपों का निर्माण अपने साम्राज्य के विभिन्न भागों में किया। शिलालेखों के माध्यम से अनेक राजाज्ञाएँ जारी की तथा धम्म प्रचार के लिये धम्म राजुक व महामात्र नियुक्त किये। एक समय तो ऐसा आया लगता था कि बुद्ध का धम्म ही भारत का धर्म बन गया है।

भारतीय धर्मों के इतिहास में बौद्ध धम्म का स्थान अद्वितीय है। इसका ज्ञान बौद्ध धम्म की उत्पत्ति और विकास के सामान्य अध्ययन से होता है। ई.पू. छठीं शताब्दी में न केवल भारतवर्ष अपितु विश्व के अन्य अनेक देशों के लिए धार्मिक आन्दोलन का युग था। यह न केवल धार्मिक एवं आध्यात्मिक चिन्तन की दृष्टि से अपितु सामाजिक एवं सांस्कृतिक दृष्टियों से भी क्रांतिकारी युग था इस अवधि में विश्व के अनेक देशों में महान समाज सुधारकों का प्रादुर्भाव हुआ। बुद्ध उनमें से एक थे, जिनका आविर्भाव भी भारत में ऐसे समय में हुआ जब बहुसंख्यक भारत धार्मिक कर्मकाण्डों से त्रस्त

था। बुद्ध ने आदमी में दुःख एवं उसके दुःखी होने के मूल में तृष्णा और अविद्या को पाया।

बुद्ध की तिथि–निर्धारण के समान, बौद्ध धम्म के उद्भव ने भी कई तरह के विवादों को उत्पन्न किया है। नगरीय संस्कृति का उद्भव एवं विकास बुद्ध के जन्म के समय तक हो चुका था। ऐसी संस्कृति का प्रभाव एक साथ कष्टकारक एवं उद्धार करने वाला दोनों तरह का था। प्राचीन सामाजिक व्यवस्था, धार्मिक व्यवस्था, जिसके सिद्धान्त की नींव ब्राम्हण परम्परा के कर्मकाण्डों पर आधारित थी, वैदिक सभ्यता के पूर्वी क्षेत्रों में अपना प्रभुत्व बनाए रखने में असफल रही थी। इसके अलावा, नगरीकरण की नई सामाजिक व्यवस्था ने इस वैचारिक शून्यता को और भी बढ़ा दिया था। इसके परिणामस्वरूप एक पूर्णतः नए एवं विस्तृत धार्मिक एवं दार्शनिक चिंतन का जन्म हुआ। इस प्रकार की असामान्य परिस्थितियों की विवशताओं ने न केवल इनके नए विश्लेषण खोजे बल्कि नए सामाजिक नियमों का एक विशेष वर्ग बड़ी तेजी से पनपने लगा, जिसने नए प्रश्नों एवं उनके संभावित उत्तरों पर ध्यान केंद्रित कर नई सामाजिक व्यवस्था को ढाँचा प्रदान किया।

प्रारम्भ में कुछ विद्वानों की मान्यता थी कि बौद्ध धम्म विभिन्न प्रकार की प्राक्–बौद्ध काल में उत्पन्न परिस्थितियों के विकास (जैसे– याज्ञिक कर्मकाण्डों द्वारा जीव हिंसा, अंधविश्वास तथा बौद्धिक गतिरोध का उत्पन्न होना, लिंग एवं जाति आधारित असमानता आदि) के विरूद्ध एक आंदोलन मात्र था। एस. राधाकृष्णन तथा डी.आर. भण्डारकर जैसे विद्वानों की ऐसी मान्यता है कि बौद्ध धम्म एक ऐसी नैतिक व्यवस्था थी, जो वैदिक धर्म में उत्पन्न कुरीतियों को दूर करने का प्रयास कर रहीं थी। एस. राधाकृष्णन तथा भण्डारकर के विचारों में त्रुटि यह थी कि उन्होंने बौद्ध धम्म के आर्थिक सामाजिक आयामों को अनदेखा कर इसे पूर्णतः वैचारिक आंदोलन के रूप में देखा। **जी.सी. पाण्डे** तथा **जी.एस.पी. मिश्रा** ने बौद्ध धम्म के उद्भव को वैदिकोत्तर तथा प्राक्–वैदिक श्रमण परम्परा के पुनरूत्थान के रूप में देखा है, जो ब्राम्हण धर्म से परे विरक्ति पर आधारित था।

जी. एस. घुर्ये तथा एन. दत्त जैसे सामाज वैज्ञानिकों ने सुझाव दिया कि बौद्ध धम्म तथा इसके समसामयिक मत ब्राम्हणों के विरूद्ध क्षत्रियों द्वारा सामाजिक वर्चस्व हेतु चलाए गए संघर्ष का परिणाम थे। यह सत्य है कि बुद्ध न केवल क्षत्रिय कुल में पैदा हुए थे, बल्कि तत्कालीन राजाओं ने भी बौद्ध धम्म को सहायता प्रदान की थी। और बौद्ध धम्म द्वारा वर्ण व्यवस्था में क्षत्रियों को ब्राम्हणों से ऊँचा स्थान दिया गया है। इन दो अनुत्पादक वर्गों में कुछ वैमनस्य जो स्वाभाविक था अवश्य रहा होगा। परंतु इसे अत्यधिक महत्व नहीं दिया जा सकता। अस्तु टी. डब्ल्यू. रायस् डेविड्स की ऐसी धारणा है कि ऋग्वैदिक काल के जड़ात्मवाद ने जो आत्मन् अर्थात् व्यक्तिवाद की पद्धति के रूप में विकसित हुआ, ऐसी हर वस्तु पर प्रहार किया जो सामाजिक रूप से कल्याणकारी थी। इसके विपरीत, बौद्ध धम्म ने इस प्रक्रिया को उलटने के लिए इस पर प्रहार किया। एन.एन. बोस का सुझाव है कि बौद्ध धम्म प्रोटेस्टेंट धर्म के समान व्यापारियों तथा राजाओं की उभरती धनाढ्यता का तपोत्पादन था। इसी प्रकार रिचर्ड फिक्क अनुभव करते है कि बहुत से राजाओं का नशापान, क्रूरता, दुश्चरित्रता, विश्वासघात, अधार्मिकता आदि तथा पुरोहितों द्वारा राजाओं को अपनी मनमानी करने में सहयोग देने की तत्परता के कारण जनसाधारण की परिस्थितियाँ अत्यंत विषम हो गई होगी राहुल सांकृत्यायन का सुझाव है कि बुद्ध ने समसामयिक सामाजिक प्रवृत्तियों से प्रभावित होकर सौदागरों, राजाओं तथा सूदखोरों के वर्गों के लिए अनुकूल नियम बना कर उन्हें पुरस्कृत किया। डी.डी. कोसाम्बी ने कहा कि विभिन्न प्रकार के सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक परिवर्तनों ने समाज को विभिन्न स्तरों पर अव्यवस्थित कर दिया था और विकास की विभिन्न अवस्थाओं में ये भिन्न सामाजिक समूह एक साथ उपस्थित थे। उनके विचार में यद्यपि लोहे का प्रयोंग उत्तर वैदिक काल में प्रारम्भ हुआ, फिर भी बलि प्रथा के प्रचलन के परिणामस्वरूप आर्थिक संसाधनों पर काफी दबाव पड़ा। और इसने बदले में समाज के दो उच्च वर्गों के हितों को उत्पादक वर्ग के विरूद्ध प्रोत्साहित किया। परिणामतः उत्पादक वर्ग ऐसे नए सामाजिक दर्शन की तलाश कर रहा था जो संस्कृति के निर्विघ्न विकास को सुनिश्चित कर सके। मध्य गंगा घाटी में ब्रम्हणीय धारणाओं एवं संस्थाओं के आगमन के कारण उत्पादक वर्ग ब्राम्हणीय सदाशयता को ग्रहण कर सकता था।

देबीप्रसाद चटोपाध्याय ने कोसाम्बी के मत को रूपांतरित करते हुए इस अवधारणा को प्रस्तुत किया कि चुँकि ब्राम्हणवाद के कर्मकाण्ड युक्त स्वभाव की तुलना में उत्तर वैदिक काल में धार्मिक आंदोलनों का दृष्टिकोण अधिक विस्तृत था, अतः वे इससे संतुष्ट नहीं थे। उनके विचार में जनजातीय संस्थाओं ने अंदर से ही विघटित होना प्रारम्भ कर दिया था। विजय एवं विस्तार की उग्र वृद्धि में प्रारंभिक राजतंत्रीय राज्य व्यवस्थित रूप से बची स्वतंत्र जनजातियों के अस्तित्व को मिटा रहे थे, और जिन क्षेत्रों पर उनका सीधा प्रभुत्व था, वहाँ नीच लोभ, निर्मम व्यभिचार, घृणित धनलोनुपता, सार्वजनिक संपत्ति की स्वार्थपूर्ण लूट जैसे नए अवयव उभर रहे थे, जिनसे हाल में पीछे छूटी जनजातियाँ अनभिज्ञ थी। दूसरे शब्दों में व्यक्तिगत संपत्ति की उत्पत्ति, जनजातीय एकात्मता का अंत निरंकुश राजतंत्र का उद्भव तथा हिंसा, लोभ जैसी असामाजिक प्रवृत्तियों के विकास और गिरवी कर सूदखोरी के भयपूर्ण वातावरण में बुद्ध ने ऐसी विचारधारा प्रस्तुत की जो जनसाधारण को मनोवैज्ञानिक शांति पहुँचा सके। बुद्ध ने इस प्रकार की दशा के कारणों की खोज में न पड़ते हुए लोगों के सांसारिक (भौतिक) दुःख की जगह सार्वभौम दुःख के ज्ञान द्वारा उन्हें आदर्श समाधान

दिया। जिन्होंने संन्यासी बने रहना ही उचित समझा उन्हें बौद्ध संघ, जो जनजातीय जीवन शैली अर्थात् स्वतंत्रता, समानता एवं बंधुत्व पर आधारित था, में जगह मिली।

ट्रेवर लिंग के अनुसार कृषि के विकास ने अत्यधिक सघन आबादी एवं नगरीकरण को जन्म दिया और बदले में नगरीकरण ने सामाजिक स्तर पर वयक्तिवाद को तथा राजनीतिक स्तर पर निरंकुश राजंतत्र को जन्म दिया। व्यक्तिवाद एवं राजतंत्रवाद ने व्यक्ति की नैतिक एवं आध्यात्मिक सोच को अस्त–वयस्त कर डाला। इस दुविधा ने मानवीय परिस्थितियों के प्रति असंतोष पैदा किया और बुद्ध के लिए व्यक्तिगत दुःखों की यह बात ही उनके मानवीय दशा के विश्लेषण का आरंभिक बिंदु बनी।

कुछ विद्वानों का विश्वास हैं कि वैदिक काल के अंतिम समय में लोहें की तकनीक के विकास एवं उसके प्रयोग के परिणामस्वरूप समाज में गुणात्मक परिवर्तन आया था। तथा इसने गंगा घाटी के नगरीकरण को जन्म दिया आगे बौद्ध धम्म की उत्पत्ति को गंगा घाटी में नगरीकरण के साथ जोड़कर देखा जाता है। दूसरे शब्दों में बौद्ध धम्म के उद्भव को गंगा घाटी में लोहे के उपकरणों के बढ़ते हुए प्रयोग के परिणाम के रूप में देखा जाता है। इन विद्वानों का कहना है कि लौह तकनीक ने कृषि के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की, जिससे अधिशेष उत्पादन में सहायता मिली और इस प्रकार नगरीय केन्द्रों जो कि दस्तकारी एवं व्यापार पर आधारित थे, का उद्भव हुआ। इस नगरीकरण से बहुत सी समस्याएँ पैदा हुई जिनका सैद्धान्तिक स्तर पर समाधान आवश्यक था ताकि कृषि का आधार अधिक विस्तृत हो सके। इन विद्वानों का विश्वास है कि बुद्ध ने इन्हीं कारणों से पशु हिंसा की निंदा की तथा शिल्प व्यापार तथा सार्वजनिक भोजनालयों को सामाजिक मान्यता प्रदान की। बौद्ध धम्म की ओर जनसाधारण को आकर्षित करने के उद्देश्य से बौद्ध भिक्षुओं को सलाह दी गई थी कि वे ब्राम्हण पुरोहितों के आडंबरपूर्ण, लोभी एवं असंयमी जीवन के विपरीत सादगीपूर्ण और पवित्र जीवन व्यतीत करें इस प्रकार लौह तकनीक के बढ़ते प्रयोग को बौद्ध धम्म के उद्भव एवं सफलता के एक उत्तरदायी कारण के रूप में देखा जाता है।

भारतीय सामाजिक इतिहास में बुद्ध को पहले महान सुधारक के रूप में चित्रित करना एक अत्यधिक सामान्य सी बात होगी। संघ में प्रवेश के मामले में तथा संघ के अंदर व्यक्तिगत व्यवहार में बुद्ध ने निश्चय ही जाति भेद की अवहेलना की। उन्होंने ब्राम्हणों के कर्मकाण्डों की पवित्रता तथा सामाजिक सर्वश्रेष्ठता जैसे आडंबरों की खिल्ली उड़ाई और इस बात पर जोर दिया कि व्यक्ति को उसकी पारिवारिक, जातिगत, सामाजिक उत्पत्ति की अपेक्षा उसके व्यक्तिगत गुणों द्वारा आँका जाना चाहिए। दरअसल यह मांग उन नए नगरीय सामाजिक वर्गों की थी जो स्वयं को पारंपरिक ब्राम्हण अधिकृत याज्ञिक कर्मकाण्डों से युक्त वैदिक धर्म की अपेक्षा बौद्ध धम्म को अधिक निकट मानते थे। ये वर्ग संदिग्ध तत्वमीमांसा में अधिक रूचि नहीं रखते थे, क्योंकि उनका जोर इस लोक में व्यावहारिक तथा प्रतिदिन के जीवन से संबंधित मामलों के समाधान पर तथा परलोक में अपनी भलाई निश्चित करने हेतु था। यह कुछ हद तक आरंभिक बौद्ध आंदोलन के सापेक्षतया अतत्वमीमांसीय झुकाव को व्याख्यायित करता है। श्रावस्ती तथा राजगृह जैसे नगरीय केन्द्रों में बिंबिसार, जीवक, अजातशत्रु जैसे समर्थक आरंभिक बौद्ध धम्म की सफलता में राजसी तथा अधिव्यापारिक पूँजी का जमा होना तथा व्यापारियों, साहूकारों के शक्तिशाली वर्ग के उदय ने नए नैतिक मूल्यों, धार्मिक दर्शन जो, महत्वपूर्ण रूप से प्राचीन वैदिक धर्म में निहित दर्शन से भिन्न स्वभाव की खोज करने वाले वर्ग को जन्म दिया।

प्रत्येक युग का अपना एक धर्म होता है जिसके पालन से उस युग की प्रजा का कल्याण होता है और जिसका पालन न करने से जनता विनाश की खाई में गिर जाती है आज के युग का धर्म है सर्वधर्म समभाव का है जो सभी धर्मो को समान दृष्टि से समान भाव से देखता है जिसे महात्मा ज्योतिबाराव फुले एवं डॉ अंबेडकर जैसे महापुरूषो ने हमारे सामने प्रकट किया था। यह धर्म भारत के लिए विशेष महत्व रखता है जहॉ कि दुनिया के बहुत से धर्मो के अनुयायी मिल–जुलकर बसते है। एक तरह से देखे तो आज का युग विज्ञान का या परमाणु का युग है और कुछ लोगो की धर्म शब्द से भी नफरत हो गई है। ऐसे हालात में सर्वधर्म समभाव का अर्थ हो जाता है सभी धर्मो के प्रति समान उदासीनता। बौद्ध धम्म को 20वीं शताब्दी में भारत में जीवन्त सामाजिक और सांस्कृतिक शक्ति के रूप में सामने लाने का कार्य डॉ. आम्बेडकर ने किया। हिन्दू धर्म की मानसिक संकीर्णताओं, ऊँच–नीच और छूआ–छूत, विषमतावादी सिद्धान्तों और भावनाओं तथा व्यवहारों से प्रताड़ित होकर सन 1935 में नासिक के येवला में उन्होंने ऐतिहासिक और परिवर्तनकारी घोषणा की थी। भारतीय बौद्ध इतिहास में यही से एक नये युग का प्रारम्भ बाबासाहेब ने बम्बई में सिद्धार्थ कालेज और ऐतिहासिक नगर औरंगाबाद में मिलिन्द कालेज की स्थापना की। उपेक्षित बौद्ध तीर्थों की धर्म यात्राएँ होने लगी। लुम्बिनी, सारनाथ, बुद्धगया, कुशीनगर, साँची, अजन्ता, एलोरा, राजगीर, नालन्दा, और वैशाली का महत्व पुनः बढ़ने लगा। 21 वर्षों तक उन्होंने बुद्ध के लोक सुखकारी उपदेशों को जन–जन तक पहुँचाने का प्रयास किया। विश्व के धार्मिक इतिहास में एक अभूतपूर्व परिवर्तन 14 अक्टूबर, 1956 को देखने में आया। जब नागपुर में उन्होंने अपने पांच लाख से अधिक उपासकों सहित बौद्ध धम्म को अंगीकार किया। बौद्ध धम्म के अध्ययन तथा व्यावहारिक स्वरूप को समझने के लिए वे श्रीलंका, बर्मा, नेपाल आदि बौद्ध देशों को गए। उन्होंने विश्व बौद्ध सम्मेलनों में भाग

लिया। बौद्धों के जीवन और व्यवहार में जो अनेक बौद्ध धम्म विरोधी बातें सम्मिलित हो गई थी उन्हें उन्होंने साफ करते हुए बुद्ध और उनका धर्म नामक महान ग्रंथ की रचना की। तब से उनका बौद्ध धर्म प्रचार आन्दोलन दिन–प्रतिदिन प्रगति करता जा रहा है। निःसंदेह भारत में बौद्ध धम्म के पुनरूत्थान में उनका योगदान महान और अविस्मरणीय है। आज भारत में बौध्द अनुयायीयो की संख्या न के बराबर है फिर भी सारा भारत भगवान बुध्द और उनके धर्मतत्वों को श्रध्दांजलि देने के लिए उत्सुक है। इसका कारण है कि भगवान बुध्द ने कुछ ऐसे तत्वो का प्रचार किया था जो हमें आज विशेष आकर्षण मालूम होते है। भगवान बुध्द के सिध्दांत ''भवतु सब्ब मंगलम'' को आज सम्पूर्ण विश्व अपना आदर्श बना चुका है।

आज का विज्ञान मनुष्य जाति के विनाश के हथियारों को विकास का नाम दे रहा हैं। मानव अधिकारों का उलंघन राष्ट्रों का एक दुसरे के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा विकासशील राष्ट्रों की अर्थव्यवस्था पर कब्जा, आतंकवाद, भ्रष्टाचार, अराजकता, अव्यवस्था सम्पूर्ण विश्व में फलफूल रहे है। आज विश्व के सभी राष्ट्र अपने सकल घरेलू उत्पाद (जी.डी.पी.) का सबसे बड़ा भाग रक्षा पर व्यय कर रहे हैं। सम्पूर्ण विश्व विकास के नाम पर बारूद के ढ़ेर पर बैठा है। जिसमे एक चिंगारी मात्र से संपूर्ण मानव सभ्यता अपने आदिम अवस्था में पहुँच सकती है। हथियारों का अविष्कार को विकास मान बैठा है। एक दुसरे से आगे निकलने की भावना ने मनुष्य को पूर्णतः स्वार्थी बना दिया है। ऐसे समय में संपूर्ण विश्व मानव समाज को एक ऐसे धम्म की आवश्यकता है, जो अंहिसा की सीढ़ियाँ चढ़कर मानव समाज को विकास की मंजिल पर पहुँचा सके।

वर्तमान समय तक प्रत्येक देश तथा जाति का हार्दिक मेल–मिलाप नहीं हो सका। बल्कि एक देश दूसरे देश से शत्रुता बढ़ा रहा है। एक जाति दूसरी जाति को नीचा दिखाने पर तुली हुई है। ऐसे समय में तथागत् गौतम बुद्ध का मानव संदेश ही भीषण उद्जन बम तथा भयानक युद्धशस्त्रों से त्रस्त मानवता का एकमात्र संरक्षक समझा जाने लगा है। वैज्ञानिक अविष्कारों के साथ यदि भगवान बुद्ध के शांतिदायक उपदेश का संपर्क होगा तो मानव तथा मानव के आज तक अर्जित की गई सभ्यता तथा संस्कृति का बचाव हो सकेगा। अकेला विज्ञान सुखद न होकर दुःख का ही कारण बनता जायेगा। बुद्ध के द्वारा दिखाया गया संपूर्ण मानव जाति के कल्याण का मार्ग ही वर्तमान समय की मांग है। बुद्ध के बताये रास्ते पर चलकर ही विश्वशांति के साथ मानव जाति का विकास संभव है।

भारत की स्वतंत्रता के पश्चात् भारतीय जनता ने भी स्वतंत्रतापूर्वक सोचना समझना आरम्भ कर दिया है। भारतीय स्वतंत्र विचार का सबसे पहला प्रमाण 'भारतीय संविधान' है। इसी संविधान की बुनियाद स्वतंत्रता, भातृत्व, समता तथा न्याय के आधार पर रखी गई। भारत में जातिविहीन समाज बनाने की जो कल्पना भारतीय संविधान का अंग बनी है। इस भावना को इस देश में आज से ठीक 2500 वर्ष पूर्व महामानव बुद्ध ने सिध्द किया। बुद्ध की संस्कृति न केवल भारतीयों को एक सूत्र में बांधती है, बल्कि पृथ्वी के प्रत्येक मानव में भाईचारा पैदा करने का साधन है। जब तक इस धम्म को सभी राष्ट्रों द्वारा स्वीकार नहीं किया जाता हम न संसार में शांति की आशा कर सकते है और न ही संसार की सुरक्षा की। बुद्ध का धम्म समाज में लुप्त होती जा रही करूणा को पुनः स्थापित करता है तथा मनुष्य को सामाजिक बनने के लिये प्रेरित करता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. आम्बेडकर, डॉ. भीमराव (1950): 'बुद्ध और उनके धम्म का भविष्य'– दापोड़ी, पुणे।
2. सोनी, वेद प्रकाश (2015): 'भगवान बुध्द : जीवन–दर्शन' – शाहदरा, दिल्ली।
3. राय चौधरी, एस.सी. (1972): 'प्राचीन भारत का राजनीतिक इतिहास'– कलकत्ता विश्वविद्यालय।
4. भदन्त, धर्मकीर्ति महाथेरो (1977): 'भगवान बुद्ध का इतिहास एवं धम्मदर्शन'– नागपुर, महाराष्ट्र।